रात्रि क्लास 3/6/68 ओमशान्ति बाप और वर्से को याद करो

बच्चों को तो समझाने में मज़ा आता होगा। दो बाप के ऊपर कुछ समझते हैं? हद का वर्सा और बेहद का वर्सा भारतवासियों को मिला था, ऐसा समझाते हो? पत्थर बुद्धियों को समझ में आता है। समझते हैं फिर बाहर जाकर भूल जाते हैं। ऐसे–2 करते समझ ही जावेंगे। कल्प पहले भी समय लगा होगा। कल्प पहले जितना समय लगा था स्थापना में, इतना ज़रूर लगेगा। आज जो सर्विस की वह कल्प–2 ऐसे ही की होगी। कल्प पहले भी ऐसे ही हाथ उठाया होगा। बच्चे जितना याद में रहेंगे उतना हुलास भी रहेगी। याद की यात्रा से हुलास वृद्धि को पाता है। ड्रामा को समझना बहुत ज़रूरी है। है तो सारा सृष्टि का ब(च)क्र। जिसने यह न समझा है वह कुछ भी समझ नहीं सकते। जो यर्थात् रीति धारणा करते हैं वह कुछ न कुछ समझा सकते हैं। धारणा नहीं होती तो समझा नहीं सकते। किसको सुख नहीं दे सकते। तुम बच्चे हो दुःखदाई को सुखदाई , सुखधाम का मालिक बनाने वाले। इतना बच्चों को नशा रहता है। ओपिनीयन जो लिखकर देते हैं उनके पास फिर जाना चाहिए। जिसको पक्का निश्चय होता है भगवानुवाच वह हमारा बाप भगवान है। कृष्ण तो बाप हो न सके। परमपिता परमात्मा वह एक ही है। यहां अच्छा है बच्चे तो आते ही हैं। खर्चा भी इतना नहीं होगा। तुम्हारे चित्रों में ज्ञान हैं। भक्ति के चित्रों में ज्ञान नहीं है। इसमें लिखा हुआ भी है शिवभगवानुवाचः। बच्चों को भी बाबा समझाते रहते हैं, भाई–2 देखना है तो यह आदत पड़ जावेगी। शरीर में दृष्टि न जाए। इसमें मेहनत है। जब तक भाई–2 न समझा है कर्मइन्द्रियाँ शैतानी करती रहेंगी। आधा कल्प शैतानी की है ना। बाप खुद कहते हैं, यह ध्यान में रहे हम भाई–2 हैं। उनका निवास स्थान वहां है। इस टेव जमाने में टाइम लगेगा। अपने ऊपर जांच करनी है, मेरे में भी टेव पड़ी है। यही डिफीकल्ट सब्जेक्ट है। ज़रा भी चंचलता न आनी चाहिए कोई भी किसम के। जितना सहज है तो उतना डिफीकल्ट भी है। यह पद पाने लिए। इस प्वाइन्ट्स आठ दानों का ही यह स्कॉलशिप है। यह बाप की डायरैक्शन सभी आत्माओं प्रति है ; परंतु पहले–2 यह नहीं समझा सकेंगे। कुछ नहीं समझेंगे। पहले तो बाप को समझें। बाबा बाबा तो करते रहते हैं। पहली बात है यह। एक लौकिक दूसरा पारलौकिक। अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।